पानी न होता

डॉ. रामनिवास 'मानव'

पानी न होता यदि धरा पर,
बोलो हम फिर क्या पीते?
और बिना पानी के भैया,
पल-भर भी कैसे जीते?

क्या बिन पानी पौधे उगते,
फसलें लगती हरी-भरी?
खिलते फूल क्या रंग-बिरंगे,
क्या फलों की लगती झड़ी?

कैसे बिजली-बादल बनते,
कैसे फिर वर्षा होती?
कैसे नदियां-निर्झर बहते,
सागर देता क्यों मोती?

ओस न गिरती, धुंध न होती,
देख न इन्द्रधनुष पाते।
कुएं, ताल और बावड़ियां,
बिल्कुल सूख सभी जाते।

बर्फ न होती, दूध न होता,
बनती लस्सी फिर कैसे?
घर के बर्तन, फिल्टर, कूलर,
लगते खाली सब जैसे।

बिन पानी जग सूना लगता,
नीरस हो जाता जीवन।
अतः बचायें हम पानी को,
पानी ही है सच्चा धन।

वन में जब दो वृक्ष मिले, बहुत दिनों के बाद।
दोनों में होने लगा, अर्थपूर्ण संवाद।।
मुंह एक ने था खोला,
और कुछ यूं वह बोला।।

दुःखी बहुत हूं मित्र मैं, क्या बतलाऊं बात।
आये दिन करने लगा, अब मानव उत्पात।।
विपदा बड़ी भारी है,
चलती नित्य आरी है।।

सब-कुछ दिया मनुष्य को, पात और फल-फूल।
हमें काटकर वह करे, लेकिन भारी भूल।।
सुनायें हम कथा किसे?
बतायें अब व्यथा किसे??

तब बोला तरू दूसरा, सुन मेरे मनमीत।
स्वार्थ में डूबा मनुष्य, नहीं किसी से प्रीत।।
यदि नहीं वह समझेगा,
फल वही सब भोगेगा।।

धरती पर सबसे बड़ा, लगें वृक्ष उपहार।
करते मानव का सदा, वृक्ष बड़ा उपकार।।
जहां पर वृक्ष लगेंगे,
वहां पर जीव बचेंगे।।

संपर्क करें:
डॉ. रामनिवास 'मानव'
'अनुकृति, 706, सेक्टर-13,
हिसार-125 005
हरियाणा
मो. 01662238720